SIR C R REDDY COLLEGE

(AIDED & AUTONOMOUS)

ELURU - 534 007, W.G. DIST. A.P. INDIA

కందుకూరి వీరేశలింగం శతవర్ధంతి సందర్భంగా

అంతర్జాతీయ సదస్సు International Conference

సాహిత్యం - సంస్కరణ దృక్పథం

साहित्यस्य संस्करणदृक्पथः साहित्य-सुधारवादी दृष्टिकोण

14th & 15th December 2018

Sponsored by UGC (Autonomous Grants)

in Association with
Department of Language & Culture, Govt. of A.P.

భావవీణ ప్రత్యేక సంచిక

International Journal of Telugu, Literary, Culture & Language Study

Special Edition. Vol - IV. Dec - 2018

ISSN No. 2456-4702 (UGC approved Journal No. 42500)

Organised by Telugu & Oriental Languages
(Sanskrit & Hindi)

Affiliated to Adikavi Nannaya University, Rajamahendravaram

(THRICE ACCREDITED AT 'A' LEVEL BY NAAC, BENGALURU : COLLEGE WITH POTENTIAL FOR EXCELLENCE)

AN ISO - 9001:2015 CERTIFIED INSTITUTION

ISSN : 2456-4702

UGC Approved Journal No. 42500

భావవీణ

International

PEER REVIEW RESEARCH JOURNAL

Vol. IV (ప్రత్యేక సంచిక) 2018 డిసెంబర్

ప్రత్యేక సంచిక సంపాదకులు

డా. ఆర్.యస్.వి.యస్. రాజారావు

అంతర్జాతీయ సదస్సు హిందీ పరిశోధన పత్రాల ప్రత్యేక సంచిక

సహ సంపాదకులు

శ్రీమతి కె. శైలజ, హిందీ అధ్యాపకులు

సర్ సి ఆర్ రెడ్డి కళాశాల

(ఎయిడెడ్ & అటానమస్)

ఏలూరు - 534 007, పశ్చిమగోదావరి జిల్లా, ఆంధ్రప్రదేశ్

AFFILIATED TO ADIKAVI NANNAYA UNIVERSITY, RAJAMAHENDRAVARAM

(THRICE ACCREDITED AT 'A' LVEL NAAC, BENGALURU,

COLLEGE WITH POTENTIAL FOR EXCELLENCE)

बंजारा समाज और सन्त सेवालाल महाराज

DR. K. CHANDRA
Lecturer in Hindi,
VR College, Nellore.

A. BABU
Lecturer in Hindi,
VR College, Nellore.

सामाजिक विचार शून्य में पैदा नहीं होता। यह बहुत सीमा तक विचारक के जीवन की समाजिक व भौतिक दशाओं की देन होता है। इसलिए सेवालाल के विचारों को समझने के लिये उन सामाजिक व भौतिक दशाओं को समझना बहुत जरूरी है। जिनमें वे पैदा हुए बडे हुए और अपना कार्य सम्पन्न किये। प्राचीन काल में विभिन्न क्षत्रिय गण जातियाँ थी। जो पशुधन 'गोधन'को ही अपना साधन मानते थे। जिसमें गोरमाटी नामक एक मुख्य जमात थी। जिनका गोपालन एक व्यवसाय बन गया था। मोतीराज राठोड जी के अनुसार 'गो' शब्द का अर्थ गाय। गोपालन करनेवाले - गो की रक्षा, करनेवाले गोर, गोर नामक वंश आगो चल पडा जो गोर वंशी तथा गोरमटी नाम से आज भी आंतरिक समाज व्यवसाय में परिचित है माटी याने मनुष्य गो पालनवाले गोरमाटी- गोरमाटी एक स्वतंत्र गोर वंश है। आज जिनको हम बनजारे कहते है। वे अपने आप को बनजारा की जगह गोरमाटी नाम से पहचानते है। (संदर्भ - प्रचीन बनजारा समाज व्यवस्था) गोरमटी बनजारे कैसे कहलाये, फारसी, संस्कृत, हिन्दी शब्द से बनजारा शब्द बना है। बनज याने व्यपार करनेवाला बनजारा, हमारे देश में व्यवसाय के आधार पर ही जाति को नाम दिया जाता। जैसे सोने का काम करनेवाला सुनार - वैसे ही बनज करने वाला - बनजारा आज सारे विश्व में 'बनजारा' शब्द लोक प्रिय है।

जिस समाज को अपना इतिहास मालूम नहीं, वह समाज अपना इतिहास निर्माण नहीं कर सकता । इतिहास हमेशा समाज के वर्तमान और भविष्य की चर्चा को आगे बढ़ाता है। बंजारा समाज का शौर्य, बलिदान, त्याग सेवा और साहस का अपना गोरवशाली इतिहास है। अधिकांश बंजारों का इतिहास अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। जो लिखा गया है, वह एक तो गलत है, नही तो विकृत अपमानकजनक है। गलत इतिहास कैसे लिखा जाता जिसका एक उदाहरण आपके सामने रखता हूँ। ''पृथ्वीराज चव्हाण हाथी से घोडे पर चढ़कर युध्ध भूमि से भागा, मुसलमानों ने उसका पिछा कर सरस्वती के किनारे पकड़कर मार डाला। 'भगोड़ा' पृथ्वीराज को देश भक्त और वीर कहा गया है। और ८० वर्षीय जयचंद राठोड चंदावर मैदान में युद्ध भूमि में वीरता पूर्वक लड़ते हुये मारा गया, उसे देश द्रोही और कायर कहा गया''। संदर्भ - भारतीय समाज का एतिहासिक विश्लेषण - भागवत शरण उपाध्याय - पृ - 164

सेवालाल महाराज ने केवल भक्त ही नहीं संत, साधु एवं समाज सुधारक थे. उसके साथ - साथ जगदाम्बा देवी के एक निष्ठ भक्त थे। उसी तरह से समाज को नयी दिशा देने वाले क्रांतिकारी महात्मा थे। बंजारा समाज को सुधारने के लिए सेवालाल हमेशा चिंतित रहते थे।'समाज की पूरी जिंदगी सेवा कर सकू, गोर कोर समाज का मुखिया बन उनके काम आ सकूँ, । इसके साथ - साथ उनको सही मार्ग दर्शन पर चलने की आवश्यकता है। इस विचार से वे आजन्म ब्रह्मचारी रहे। उनके क्रांतिकारी संदेश जो मनुष्य को विचार करने को मजबूर करते हैं। इसी कारण बंजारा समाज उन्हे भगवान का प्रतिरूप मानते हैं।

सेवा भाया बंजारो कि सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने के लिए हमेशा संघर्ष करते थे। बंजारा समाज को सुधार ने के लिए सेवालालने ठोस निर्णय लिया है। वे बार-बार सोचते थे कि बंजारों को सही मार्ग पर चलानेकी आवश्यकता है। इसलिए सेवा भायाने बंजारों के साथ जुड़कर उनके अन्दर चेतना के बीच बोये थे।

सेवालाल ने गोर गरीब जनता को अज्ञान की नींद से जगाने की सेवा की। जैसे पढना, लिखना उनके मानवीय कार्यो से सेवादास आज समाज के मूल्यवान रतनलाल मोती बन गए। संत सेवालाल महाराज तो आज सारे देश के बंजारों के श्रध्दास्थान और प्रेरणा स्थान है। संत सेवालाल जी का कहना है कि मनुष्य को एक ही सूत्र में बांधनेवाला एक ही धर्म है, वह है मानवतावाद। बौद्ध, कबीर, नामदेव, रैदास, गुरुनानक, तृकाराम महराज की विचार धारा का प्रचार एक गोपाल गाय चरानेवाला आम आदमी ने, अपने अनुभव तथा ईमानदारी से 'सत्य और अहिंसा' का धुंधला मार्ग प्रकाशित किया। वर्तमान में भी बंजारा समाज पर सेवा भाया का प्रभाव हमें दिखाई देता है।

भाईचारे का माहोल समाज में, निर्माण किया। आम आदमी को जीने की ऊर्जा टांडों, खेडों, गांवों में पहुँचाई। एक नई चेतना की ज्ञान, आँधी संत सेवालाल महाराज ने निर्मित की। जिससे ढोंगी - पाखंडी, अज्ञानी परम्परा को मिट्टि में मिला दिया। जिनके मौखिक बोल, वचन, लडी मौखिक लोक काव्य आज भी गोर बंजारों के कंठ में बसा हुआ है। जैसे लोकगीत, भजन.

सेवाभाया की सेवा धार्मिक विचार धारा संत सेवालाल महाराज मनुष्य को सर्व श्रेष्ठ मानते थे। 'जीव जिनगानीर साई वेस'। (संदर्भ - लदेणी - मोतीराज राठोड) यह भूत दयावादी विचार सबको प्रसन्न सुख और शांतिमय जीवन दे सकती है। सेवाभाया को किसी देवता या किसी देवता या किसी आवतारवाद पर विश्वास नही था। उसका विश्वास मनुष्य ही था। सर्व प्रथम मनुष्य और उसका अस्तित्व अस्मिता को समझकर उन्होंने कहा है कि ''तम सोता तमारे जीवणोमां वजालो कर सकोचो'' (संदर्भ - लदेणी-मोतीराज रठोड) मनुष्य स्वयं ही अपना स्वामी है। भला उसका स्वामी दूसरा कैसे हो सकता है? तुम्हारे जीवन में तुम्हीं उजाला, निर्माण कर सकते हो। कोई दूसरा आएगा इस विश्वास में मत रहो। अपना काम स्वयं करो'।

मनुष्य का ही नही जीव - जन्तुओं का भी कल्याण हो, सेवालाल महाराज धर्म के बारे में इस प्रकार अपना विचार प्रकट करते थे कि सत्य, अहिंसा, दया-करूणा, प्रज्ञा को पवित्र मान कर या उसे नीति चरित्र मानकर जो आचरण से कर्तव्यवान होता है वह धर्मी है। इस नीति धर्म पर सेवाभाया ने अधिक बल दिया है। सेवा का धर्म ही प्राकृतिक धर्म है।

सेवा के बोल।

लग-भग 300 सो वर्ष पूर्व सेवा भाषा मे जो संदेश दिया है। कुछ बोल आपके सामने रखता हू।

कोई केती मोटो छेई,
कोई केती नानक्या छेई,
केनी भजो मत,
केनी पूजो मत,
झुझो मत,
पुजा पाटमें वेळ घाले पेक्षा
करणी करेर शिको .... (लदेणी - मोतीराज राठोड)

कोई किसी से बड़ा नहीं कोई किसी से छोटा नहीं सब समान है। किसी के नाम का जप मत करो, किसी की पूजा मत करो, किसी से डरो मत, पुजा-पाठ में वक्त बरबाद करने के बजाय कष्ट करो, आच्छे कर्म करो।

निसर्ग सो कोसेप दीव रीय,
रपया कटोरो पाणी वकजाय,
गावडीर शिंग सोने वेजाय,
रपयाम बार चणा वकीय,
मलेकर खबर पलकेम कळीय,
बना बळदेम गाडी धा सीय।

दुनिया में पानी को बहुत महत्व प्राप्त होगा और रूपयों से पानी बिंकेगा। उदा. मिनरल वाटर। गोधन का विनाश होगा, सोने की कीमत में गाय का सिंग बिकेगा, दुनिया विनाश की और बढ़गी और मानव जाती का अस्तित्व मुश्किल में आयेगा और 50 कि.मी. अंतराल पर दीया दिखेगा. महंगाई इतनी बढ़गो की 1 रूपयों में 12 चने भी

భావవీణ ప్రత్యేక సంచిక
ISSN : 2456 - 4702

नहीं आयेंगे। दुनिया इतनी तरक्की करेगी की पलक झपकते ही 1000 कि.मी. दूर की बात समझेगी और दिखेगी। (Phone, TV, etc.,) बैलगाडी का जमाना खत्म होगा। (Car, Bus, etc.,) उपरोक्त सेवालाल के बोल के अनुसार हम यह कह सकते है कि, सेवालाल बहुत बड़े विचारक थे। सेवालाल की हर बात पर हमें गोर करना चाहिए, तभी मानवता का विकास होगा। उनका एक वचन इस प्रकार से है।

गोरमाटी काटमत बकरी बकरान

केनी हक छेनी दूसरेर दम काडेन

घाल सकेनिसतो काडमत केरी दमेन (सेवासतक - कृष्णा नाईक चव्हाण)

अहिंसा परम धर्म है। अपना जैसा जीव है, वैसे ही सभी प्राणी - पशुओं का जीव है। पेट के लिए बहुत से निकम्मे लोग साधु भगत बन गए हैं। उन पर विश्वास मत रखो। ये ढोंगी, पाखंडी हैं भक्त नहीं। मौ खेलूँ कोणी, मैं पुजूँ कोणी' ऐसे पाखंडी भक्तों से दूर रहने का संकेत संत सेवालाल महाराज ने किया है। हिंसा मत करो। आखिर में बंजारों से सेवा भाया कहते हैं कि - हिंसा मत करो।

व्यसनों से दूरः-दारू-गंजा मत पिओ। 'दारू मत पिओ, मत पिओ कोई'। दारू-गंजा सेवन से मनुष्य पशुवत हो जाता है। उसके साथ ही परस्त्रि गमन जैसे बुरे कर्म मत करो। अपनी नीतिमत्ता चरित्र, सदाचार ही सबसे बड़ा मूल्यवान धन है।

निष्कर्षः

संत सेवालाल महाराज ने मांसाहार, नशा - पानी अंधश्रद्धा से दूर करने के लिए सारा जीवन समाज को अर्पित किया। सेवालाल ने कहा। 'मास जीवणोरो नास'।

संत सेवालाल महाराज का नाम लेकर संत सेवालाल के संदेश के साथ हम भाईमानी करते हैं। बड़ी ईमानदारी से इसका अर्थ गंभीरता से सोचकर दृढ़ संकल्प हमें करना चाहिए की धीरे - धीरे बलि प्रथा से समाज को दूर करना सेवा भाया के भक्त का कर्तव्य बनता है। माँसाहार और मद्यापान से समाज को दूर करने से ही संत सेवालाल महाराज के बोल खरे होंगे।

जय सेवालाल